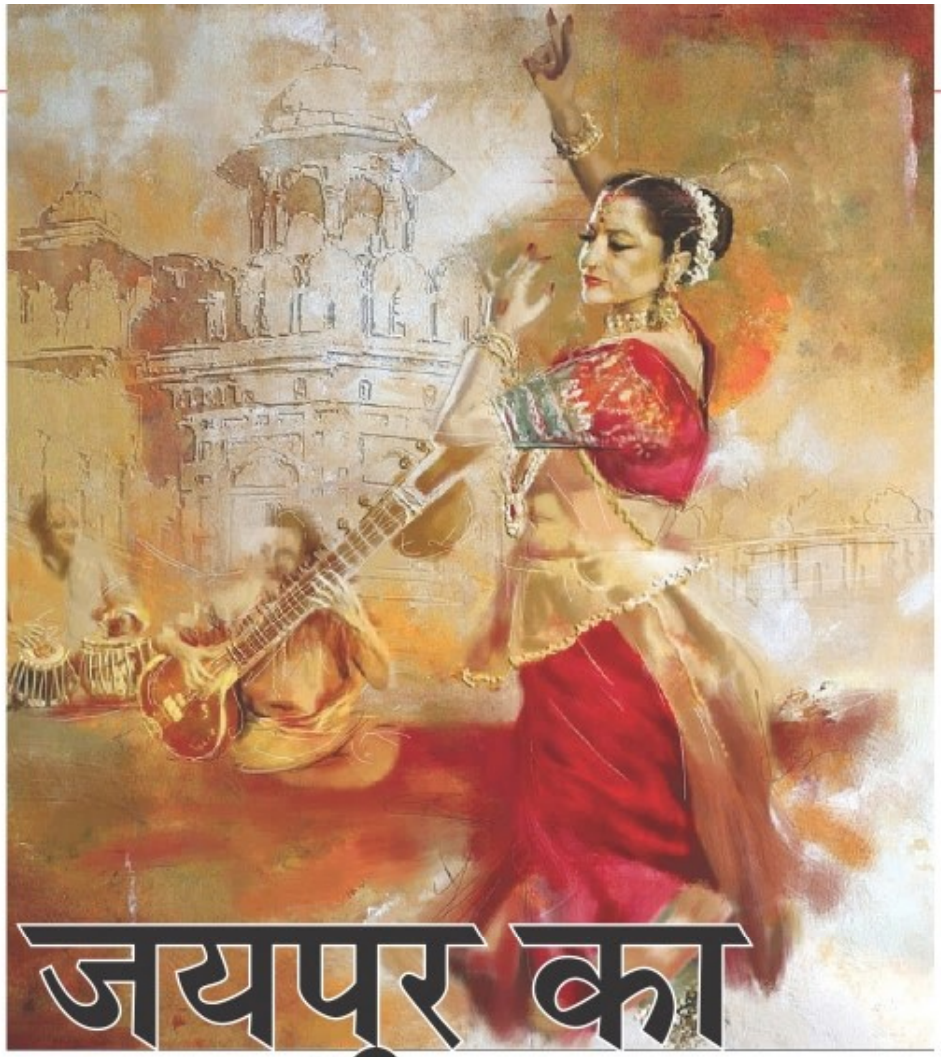

जयपुर का कथक घराना

-डॉ. शिखा शुक्ला

बीकानेर के महाराज अनूपसिंह के दरबार में सांवलदास नामक कथक हुए, जो जीवनदासजी के पुत्र थे। जीवनदास भी नृत्य संगीत के महान ज्ञाता थे। इन्हीं सांवलदास के नाम से जयपुर में पहले श्यामलदास घराना या सांवलदास घराना प्रचलित था। सांवलदास घराना ही आगे चलकर दो भागों में बंट गया। जयपुर घराना, जो नर्तक चुन्नीलाल की देन है तथा बनारस का जानकीप्रसाद घराना। वास्तव में जानकी प्रसाद, गनेशीलाल तथा दूलाराम परस्पर भाई थे और चुन्नीलाल, जानकीप्रसाद के शिष्य थे। कालान्तर में जानकी प्रसाद अपने भाइयों को लेकर बनारस चले गए और यहीं से बनारस घराने की नींव पड़ी। चुन्नीलाल ने जयपुर में ही रहकर अपने पुत्रों जयलाल, सुंदरप्रसाद तथा मालूलाल को नृत्य की शिक्षा दी। जयलाल और सुन्दर प्रसाद उच्चकोटि के नर्तक हुए।

जयपुर घराने की ही दूसरी शाखा से दूलहाजी, हरिप्रसाद और हनुमान प्रसाद हुए। हनुमान प्रसाद स्व. बिन्दादीन के समकालीन थे। हरिप्रसाद और हनुमान प्रसाद की जोड़ी 'देवपरी' की जोड़ी के नाम से विख्यात थी और तत्कालीन जयपुर दरबार के गुणीजन खाने में नियुक्त थे। हरिप्रसाद जी को कोई पुत्र नहीं था, किन्तु हनुमान प्रसाद के तीन पुत्र हुए- मोहनलाल, चिरंजीलाल तथा नारायण प्रसाद। वर्तमान समय में नारायण प्रसाद के पुत्र चरनगिरधर 'चांद' जयपुर घराने के प्रतिनिधि कलाकार हैं। विदुषी उर्मिला नागर, गीतांजलि लाल, शोभा कौसर, राजेन्द्र गंगानी और प्रेरणा श्रीमाली जैसे अनेक प्रतिष्ठित नर्तक-नर्तकियां इस परम्परा की कीर्ति पताका देश-विदेश में फहरा रहे हैं।

जयपुर घराने के प्रमुख कलाकार

चिरंजीलाल

चिरंजीलाल ने कथक नृत्य की शिक्षा अपने पिता हनुमान प्रसाद व ताऊ हरिहर प्रसाद तथा लखनऊ घराने के आचार्य बिन्दादीन महाराज से प्राप्त की। ये जयपुर घराने के प्रसिद्ध नर्तक नारायण प्रसाद जी के अग्रज थे। इन्होंने कुछ समय उदयपुर व रायगढ़ रियासतों में भी कार्य किया। बाद में वह तबले के क्षेत्र में आ गये तथा एक उच्चकोटि के तबलावादक के रूप में प्रसिद्ध हुए। अपने छोटे भाई पं. नारायण प्रसाद की मृत्यु के बाद इन्होंने अपने पुत्रों चरनगिरधर 'चांद' व तेज प्रकाश 'तुलसी' को नृत्य शिक्षण का कार्य किया।

पं. मोहन लाल

ये जयपुर घराने के प्रसिद्ध नर्तक हनुमान प्रसाद के पुत्र थे। उन्होंने जयपुर घराने की शिक्षा अपने पिता व लखनऊ घराने की शिक्षा बिन्दादीन महाराज से प्राप्त की। लखनऊ घराने की शिक्षा प्राप्त करने हेतु उन्हें लखनऊ जाना पड़ा। लखनऊ से आकर जयपुर दरबार के गुणीजनखाने में दरबारी नर्तक हो गये। ये पं. चिरंजीलाल व पं. नारायण प्रसाद के अग्रज थे। कथक नर्तक होने के साथ-साथ वे एक उच्चकोटि के गायक भी थे।

पं. नारायण प्रसाद

जयपुर घरानें के महान नृत्यचार्य पंडित नारायण प्रसाद का जन्म 1908 में हुआ था। ये पंडित हनुमान प्रसाद के पुत्र थे। उन्होंने नृत्य की शिक्षा अपने पिता